# मोज़ों के बदले खाना

लेखन व चित्रः जैक कैन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

# मोज़ों के बदले खाना

लेखन व चित्रः जैक कैन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बहुत दूर-दराज़ किसी जगह, बहुत समय पहले एक बूढ़ा और उसकी बीवी रहते थे।

वे बेहद ग़रीब थे।

उनके पास बस एक टूटा-फूटा घर था
और एक शलगम की क्यारी।

एक दिन बूढ़े ने अपनी बीवी से कहा
"इन्सान एक ही चीज़, यानी शलगम
खाते-खाते ऊब जाता है।"

उनके पास ही एक किसान दम्पति रहता था
जिनकी एक गाय थी।
बूढ़ा और उसकी बीवी गाय को घूरा करते
और दूध और पनीर के सपने देखा करते।
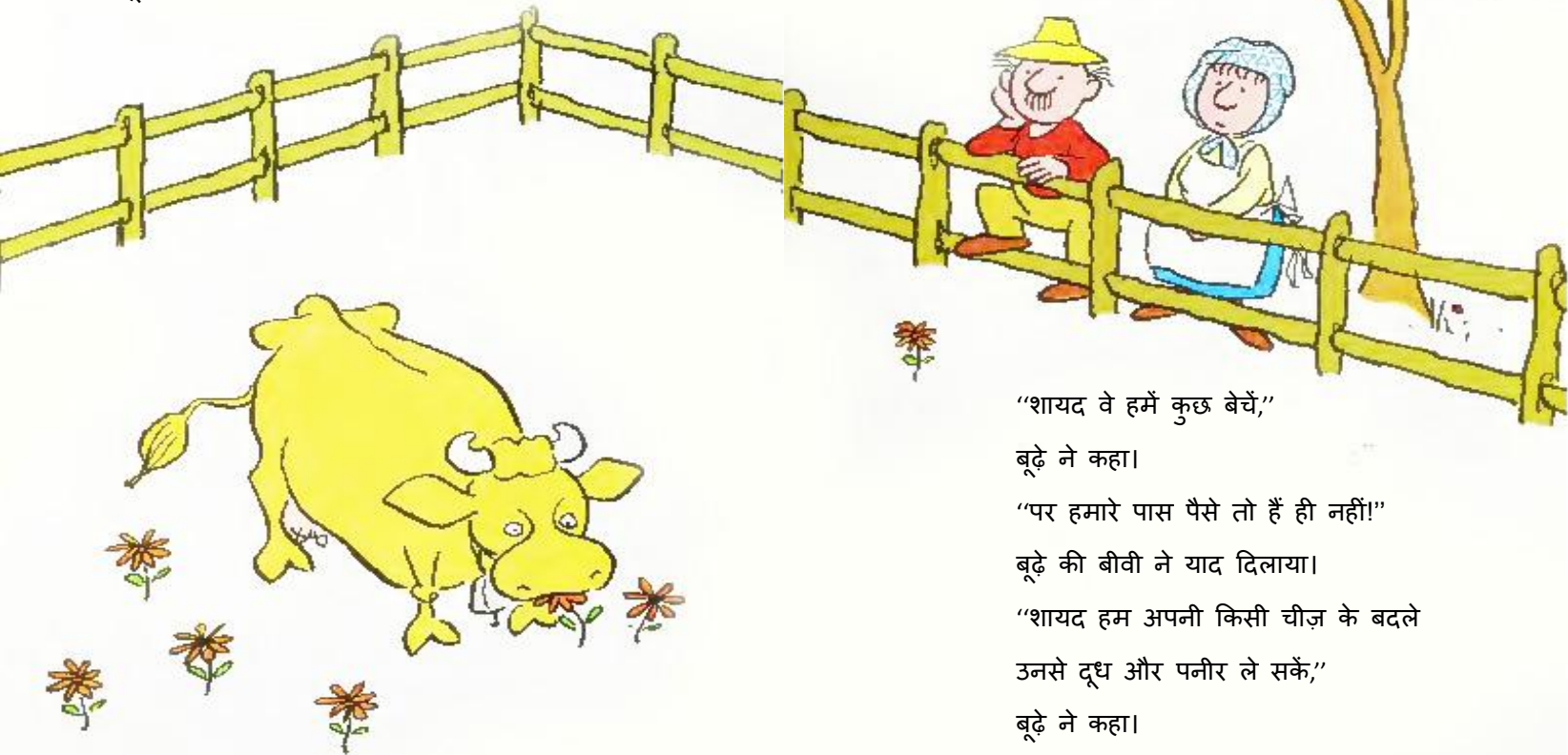
"शायद वे हमें कुछ बेचें,"
बूढ़े ने कहा।
"पर हमारे पास पैसे तो हैं ही नहीं!"
बूढ़े की बीवी ने याद दिलाया।
"शायद हम अपनी किसी चीज़ के बदले
उनसे दूध और पनीर ले सकें,"
बूढ़े ने कहा।

“यह तो हो सकता है,” बुढ़िया ने कहा।

उन दोनों ने अपना घर छान मारा

तकि वे अदला-बदली के लिए कुछ तलाश सकें।

उन्हें बस एक ही चीज़ मिली

जो फटी-चीथड़ी न थी।

यह चीज़ थी मोज़ों की एक जोड़ी।

बूढ़ा मोज़े ले कर

उस किसान दम्पति के पास गया

जिनके पास एक गाय थी।

“वाह! यह तो लज़ीज़ है!”

उसकी बीवी ने कहा।

कुछ ही देर बाद

वह खुशी से बाल्टी भर दूध

और एक छोटा पनीर लिए

घर लौटा।
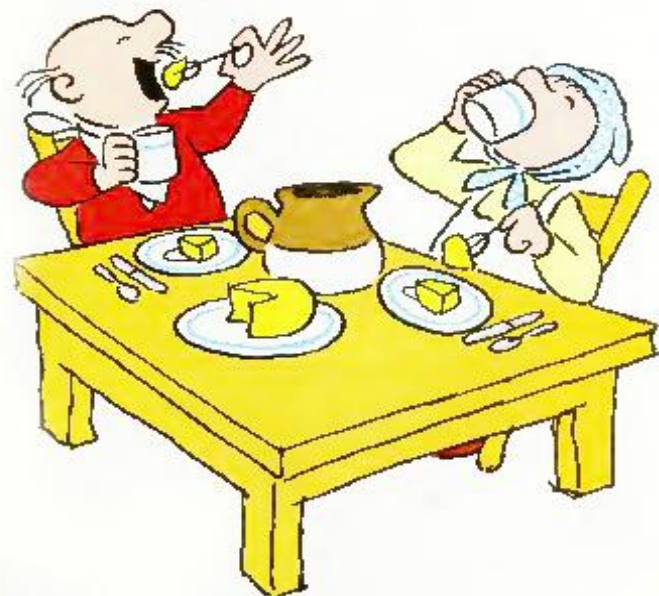
बहुत समय नहीं गुज़रा कि
उन्हें लगने लगा कि काश
उनके पास कुछ और होता।
पर अदला-बदली के लिए
और मोज़े तो थे नहीं।

"मैं एक जोड़ी मोज़े बुन डालती हूँ!"
बुढ़िया ने कहा।

पर बुढ़िया के पास ऊन भी तो नहीं थी।

सो उसने बूढ़े के स्वेटर का एक हिस्सा

उधेड़ा और उससे

एक जोड़ी मोज़े बुन डाले।

उन्होंने फिर बदला-बदली की
और दूध और पनीर पा लिया।

पहले की ही तरह उन्होंने जी भर के खाया-पिया।

जब वह सब खत्म हुआ, बुढ़िया ने
एक और जोड़ी मोज़े तैयार किए।

एक बार फिर बूढ़े को
मोज़ों के बदले दूध
और पनीर मिल गया।

लज़ीज़!

जब दूध और पनीर खत्म हुआ
बुढ़िया फिर से मोज़े बुनने बैठी।

पर इस बार सिर्फ एक ही मोज़े
के लिए ऊन बचा था।

“एक मोज़े से भला क्या फ़ायदा होगा?”
बुढ़िया ने कहा। “वे इसके बदले
भला दूध और पनीर क्यों देंगे!”

''देखते हैं,'' बूढ़े ने कहा।

वह मोज़ा ले किसान दम्पति के पास गया।

''मेरे पास बस एक मोज़ा है इस बार,'' उसने कहा।

''क्या तुम मुझे इसके बदले

आधी बाल्टी दूध और आधा पनीर दोगे?''

"अरे कोई बात नहीं,"

किसान ने जवाब दिया।
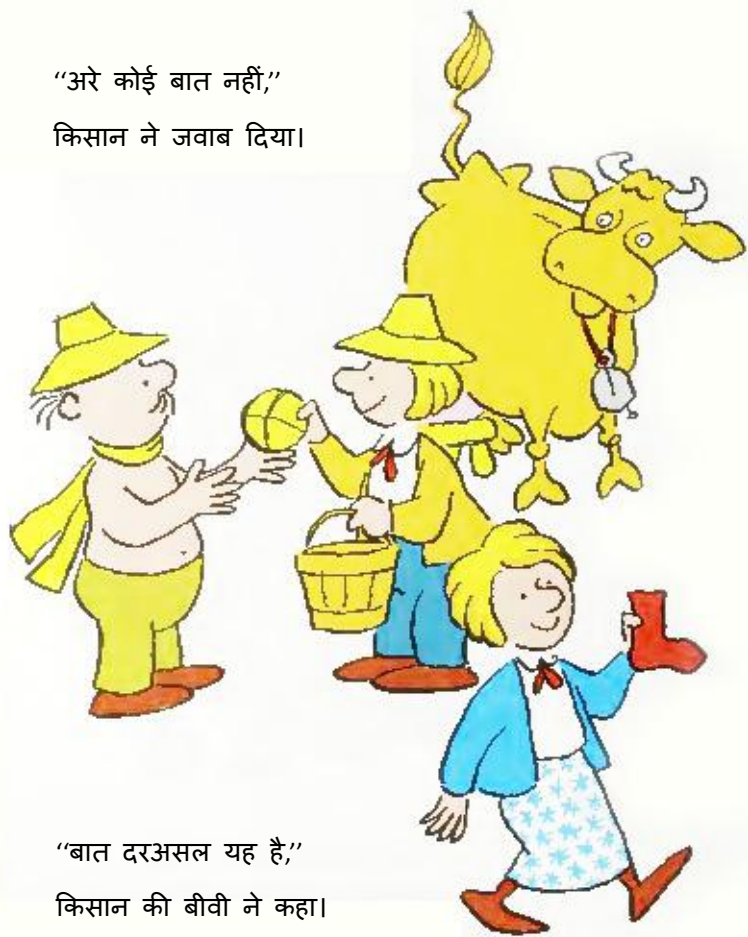
"बात दरअसल यह है,"

किसान की बीवी ने कहा।

"मुझे बस एक ही मोजे की ज़रूरत थी।"

वह अपने पति को क्रिसमस पर देने के लिए

एक स्वैटर बुन रही थी। स्वैटर के लिए ऊन उसे

मोज़ों की जोड़ियाँ उधेड़ने से मिली थी।

उसे स्वैटर पूरा करने के लिए

बस एक ही मोज़े की ज़रूरत थी।
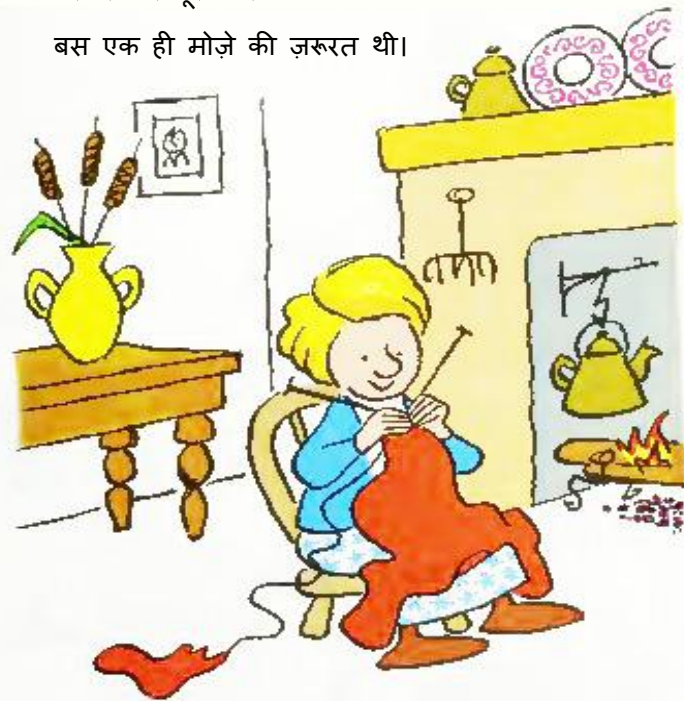
पर स्वैटर उसके पति को ठीक से आया ही नहीं।

सो किसान की बीवी ने स्वैटर बूढ़े को दे दिया।

क्योंकि उसने ग़ौर किया था

कि बूढ़े के पास स्वैटर नहीं था।

स्वैटर बूढ़े को बिलकुल ठीक आया।